

# डॉ. रॉबर्ट ए. पीटरसन, क्राइस्टोलॉजी, सत्र 3, पैट्रिस्टिक क्राइस्टोलॉजी, भाग 2, उत्पत्ति और नाइसिया की परिषद

© 2024 रॉबर्ट पीटरसन और टेड हिल्डेब्रांट

यह डॉ. रॉबर्ट पीटरसन हैं जो क्राइस्टोलॉजी पर अपना व्याख्यान दे रहे हैं। यह सत्र 3 है, पैट्रिस्टिक क्राइस्टोलॉजी, भाग 2, उत्पत्ति और निकिया की परिषद।

हम क्राइस्टोलॉजी, विशेष रूप से पैट्रिस्टिक क्राइस्टोलॉजी पर अपने व्याख्यान जारी रखते हैं; अधिक विशेष रूप से, हम उत्पत्ति पर हैं।

उनका जन्म 185 के आसपास हुआ था और वे 254 साल तक जीवित रहे, वे अलेक्जेंड्रिया के ईसाई माता-पिता के बेटे थे और चर्च के भीतर पूर्वी धर्मशास्त्र के प्रतिनिधि के रूप में सेवा करते थे। उनके पिता सेप्टिमियस सेवेरस के उत्पीड़न के दौरान शहीद हो गए थे। वह एक छोटे बच्चे थे और उन्होंने खुद को शहादत के लिए पेश किया, लेकिन उनकी माँ ने उनके कपड़े छिपाकर उन्हें घर पर रहने के लिए मजबूर किया।

एक शानदार विचारक, 18 साल की उम्र में, वह पहले से ही क्लेमेंट के स्कूल में एक शिक्षक थे, जहाँ उन्होंने कैटेचुमेन, यानी बपतिस्मा के लिए उम्मीदवारों को प्रशिक्षित किया। कई सालों तक ऐसा करने के बाद, ओरिजिन ने खुद को पूरी तरह से ईसाई दर्शन के एक स्कूल को चलाने के लिए समर्पित कर दिया। वहाँ, उन्होंने ईसाइयों और गैर-ईसाइयों दोनों को व्याख्यान दिया और काफी प्रसिद्ध हो गए।

उन्होंने 233 में अपना शिक्षण और लेखन मुख्यालय कैसरिया में स्थानांतरित कर दिया। डेसियस के अधीन उत्पीड़न के दौरान, उन्हें इस हद तक प्रताड़ित किया गया कि जेल से रिहा होने के कुछ समय बाद ही उनकी मृत्यु हो गई। उनका साहित्यिक उत्पादन बहुत बड़ा था।

सेल्सम में रोमन दार्शनिक सेलसस से बहस की, और एक व्यवस्थित धर्मशास्त्र, डेप्रिंसिपियस लिखा। वह हेलेनिस्टिक दर्शन और विशेष रूप से नियोप्लाटोनिज्म के पक्षधर थे, और कई कारणों से एक विवादास्पद व्यक्ति थे। हालाँकि, ट्रिनिटेरियन क्राइस्टोलॉजिकल विचार के संदर्भ में, बाद के कई रूढ़िवादी धर्मशास्त्री उनके बहुत आभारी थे, विशेष रूप से अथानासियस और कैप्पाडोसियन, यानी बेसिल और दो ग्रेगरी।

उनका सबसे उल्लेखनीय और विवादास्पद त्रित्ववादी योगदान पिता द्वारा पुत्र की शाश्वत पीढ़ी का उनका सिद्धांत था। यह कुछ नया नहीं था, लेकिन उत्पत्ति के लिए इसका उपयोग पिता और पुत्र के बीच संबंधों को समझने के लिए किया गया था। उन्होंने बताया कि मानव पीढ़ी से उनका क्या मतलब है और तर्क दिया कि यह किसी बाहरी कार्य, यानी उनकी शाश्वत पीढ़ी के द्वारा नहीं होता है, बल्कि ईश्वर की प्रकृति के अनुसार होता है और ईश्वर के अलावा किसी अन्य के द्वारा इसकी कोई शुरुआत नहीं होती है।

फिर ऐसा कोई बिंदु नहीं है जहाँ पुत्र अस्तित्वहीन हो, या पिता पुत्र के बिना हो। पुत्र को किसी भी तरह से प्राणी के रूप में नहीं देखा जा सकता, जो बाद के एरियन धर्मशास्त्र के विरुद्ध है। लेकिन ओरिजिन की समझ में एक समस्या है।

उनका मानना है कि पुत्र की उत्पत्ति पिता की इच्छा के स्वतंत्र कार्य द्वारा होती है, लेकिन यदि यह पूरी तरह से स्वतंत्र है, तो क्या यह सोचना संभव है कि पुत्र की उत्पत्ति नहीं हुई होगी? यदि ऐसा है, तो क्या इसका अर्थ यह है कि पुत्र पिता से कमतर हैसियत और सार का है? उत्पत्ति इस निष्कर्ष से बचने की कोशिश करती है, क्योंकि वह पीढ़ी के शाश्वत चरित्र पर जोर देती है और कहती है कि हमें इस कार्य को मानवीय शब्दों में नहीं समझना चाहिए। उत्पत्ति के लिए, पिता और पुत्र में प्रकृति की एकता है और वे एक ही शक्ति साझा करते हैं, क्योंकि उनके बीच कोई असमानता नहीं है। फिर भी उत्पत्ति कहती है कि पुत्र अपने ईश्वरत्व को पिता से प्राप्त करता है, और वह इस बात से इनकार करता है कि बाद में कैल्विन ने क्या सिखाया, कि पुत्र ऑटोथियोस है, स्वयं का ईश्वर, क्योंकि उत्पत्ति के लिए, पुत्र और आत्मा व्युत्पत्ति द्वारा पिता के ईश्वरत्व में साझा करते हैं।

दुर्भाग्य से, बाद के वर्षों में, पुत्र और आत्मा की अधीनता पर ओरिजिन के जोर ने एरियन द्वारा पुत्र के देवता को अस्वीकार करने का द्वार खोल दिया, भले ही वह ओरिजिन का इरादा नहीं था। क्राइस्टोलॉजी के संदर्भ में, ओरिजिन ने तर्क दिया कि मसीह में एकता मसीह की आत्मा की उसके शरीर और लोगो के बीच तात्कालिकता के माध्यम से प्राप्त की गई थी। यह विचार आत्मा के पूर्व-अस्तित्व में ओरिजिन के गैर-बाइबिल विश्वास से जुड़ा था, और इस प्रकार मसीह के मामले में, एक विशेष आत्मा थी, जो अपनी शुद्धता और समर्पण के कारण, लोगो के साथ एकता में प्रवेश करने में सक्षम थी।

फिर परमेश्वर ने इसके लिए एक शुद्ध, गैर-भ्रष्ट मानव शरीर बनाया, जो लोगो की आत्मा जोड़ी को घेरने में सक्षम था और उन्हें एक आदमी के रूप में पीड़ित और मरने की अनुमति देता था, एक आदमी के रूप में घेरने के लिए। पुनरुत्थान के बाद, यीशु की मानवता को इस तरह से महिमामंडित और दिव्य बनाया गया कि जोर लोगो के मनुष्य बनने पर नहीं था, बल्कि मनुष्य के लोगो बनने पर था। इस बिंदु पर, ओरिजिन का धर्मशास्त्र मददगार नहीं था, क्योंकि वह मसीह को केवल मात्रात्मक रूप से हमसे अलग बनाने और लोगो के लिए परिपूर्ण के सार्वभौमिक संबंध का केवल एक असाधारण मामला बनाने के खतरे में था।

इसके अलावा, ओरिजिन ने आत्मा को गतिविधि के केंद्र के रूप में देखकर बाद के नेस्टोरियन क्राइस्टोलॉजी के लिए द्वार खोल दिया, जिसका अर्थ था कि मसीह में यह एक तरह का दोहरा व्यक्तित्व था। क्राइस्टोलॉजिकल चिंतन में इस चरण में, ओरिजिन ने स्पष्ट रूप से प्रकृति-व्यक्ति भेद नहीं किया और इस प्रकार पुत्र के व्यक्तित्व में मसीह की एकता का पता नहीं लगाया, जो बाद के क्राइस्टोलॉजी ने किया। परिणामस्वरूप, ओरिजिन ने चर्च के भीतर बाद के विधर्मों के लिए द्वार खोल दिया, जिस पर चर्च को विचार करना होगा और उसे अस्वीकार करना होगा, और शायद इस क्षितिज पर सबसे महत्वपूर्ण विधर्म एरियनवाद था, एक विधर्म जिस पर अब हम अपना ध्यान केंद्रित करते हैं।

नाइसिया की परिषद और एरियनवाद। ग्रीसिसिज्म के बाद, चर्च का दूसरा सबसे बड़ा पाखंड एरियनवाद था, जिसे 256 से 336 के आसपास एलेक्जेंड्रिया के एक प्रेस्बिटर एरियस ने बढ़ावा दिया था, और फिर इसी तरह की स्थिति पर तर्क देने वाले अन्य लोगों द्वारा प्रचारित किया गया। एरियनवाद की निंदा नाइसिया 325 और कॉन्स्टेंटिनोपल 381 की परिषदों द्वारा की गई थी, भले ही इसका प्रभाव आज भी जारी है, जैसा कि तथाकथित यहोवा के साक्षियों द्वारा दर्शाया गया है।

गूढ़ज्ञानवाद की तरह, अगर चर्च द्वारा स्वीकार किया जाता, तो एरियनवाद ने सुसमाचार और ईसाई धर्म की जड़ और शाखा को नष्ट कर दिया होता। फिर भी, अपनी गंभीर प्रकृति के बावजूद, एरियनवाद ने चर्च को मसीह की पहचान को अधिक सटीकता और परिष्कार के साथ परिभाषित करने में मदद की। चूंकि कोई भी धार्मिक दृष्टिकोण या आंदोलन शून्य में शुरू नहीं होता है, इसलिए उस बड़े संदर्भ को निर्धारित करना महत्वपूर्ण है जिसमें एरियनवाद उत्पन्न हुआ।

तीसरी सदी की चर्चा से आते हुए, और चर्च की सुसंगत एकता और विविधता बनाने की कुशती को देखते हुए, विशेष रूप से पिता-पुत्र संबंध के संदर्भ में, मोनार्कियन और लोगोस क्राइस्टोलॉजी प्रतिमानों ने बहुत अधिक वजन उठाया। जो लोग मोनार्कियन प्रतिमान के भीतर ईश्वर की एकता को संरक्षित करने की कोशिश करते थे, अगर सावधान नहीं थे, तो वे मोडलिज्म की ओर झुक गए। अन्य, लोगोस क्राइस्टोलॉजी से प्रभावित, अगर सावधान नहीं थे, तो ऑन्टोलॉजिकल सबऑर्डिनेशनज्म की ओर झुक गए, लेकिन पुत्र और आत्मा को कम दर्जा देने के अनुसार, पिता के साथ ईश्वर की एकता को बनाए रखा, मूल द्वारा सिखाए गए अनुसार पुत्र और आत्मा को देवत्व प्रदान किया।

इसमें कोई संदेह नहीं कि इन विचारकों ने ईश्वरत्व के भीतर पिता, पुत्र और आत्मा के बीच संबंधों की बात की, फिर भी इसका परिणाम एक अस्थिर और विस्फोटक स्थिति में हुआ। तीसरी शताब्दी के अंत तक, मोडलिज्म का समाधान हो गया था, लेकिन अधीनतावादी मुद्दा अनसुलझा था, और एरियस जैसे लोगों ने इस अस्थिर स्थिति को अपनाया, जहाँ कोई भी पिछला धर्मशास्त्री नहीं गया था। एरियस ने पुत्र को एक प्राणी में बदल दिया।

यद्यपि वह सबसे श्रेष्ठ प्राणी था, उसने पुत्र को पिता का प्रथम पुत्र माना, लेकिन उसने उसके शाश्वत पूर्व-अस्तित्व को अस्वीकार कर दिया और इस प्रकार पिता के साथ सह-समान दर्जा प्राप्त किया। चर्च ने जोर देकर कहा कि ऐसा दृष्टिकोण बाइबल के यीशु और ईश्वर और मोक्ष के बारे में शास्त्र की शिक्षा का खंडन था। यहाँ, संक्षेप में, एरियस के विचार की रूपरेखा, मूल रूपरेखाएँ हैं।

एरियस ईश्वर की उत्कृष्टता और उसकी पूर्ण एकता को बनाए रखने के लिए चिंतित था, जिसने उसके लिए ईश्वर द्वारा किसी अन्य व्यक्ति के साथ अपने अस्तित्व को साझा करने की किसी भी संभावना को समाप्त कर दिया। अन्यथा, ईश्वर की एकता से समझौता हो जाएगा। तो फिर, हमें पिता-पुत्र के रिश्ते की कल्पना कैसे करनी चाहिए? एरियस ने पुष्टि की कि केवल पिता ही शाश्वत है; इस प्रकार, पुत्र और आत्मा का एक मूल है।

कि एक समय ऐसा था जब पुत्र बाकी सृष्टि के समान नहीं था। पुत्र ईश्वर से उत्पन्न हुआ था, जो एरियस के लिए सृजित का पर्याय है, भले ही वह पुत्र को सभी सृजित प्राणियों में सर्वोच्च मानता था। ईश्वर की पूर्ण उत्कृष्टता को देखते हुए, सृजन करने के लिए, ईश्वर को पहले एक आध्यात्मिक प्राणी का सृजन करना था जो मध्यस्थ, मध्यस्थ व्यक्ति, एक प्रकार का प्लेटोनिक डेमिर्ज के रूप में कार्य कर सके।

पवित्रशास्त्र में, इस आकृति को बुद्धि, छवि या शब्द कहा गया है, लेकिन इसलिए नहीं कि पुत्र पिता के बराबर का ईश्वर है या ईश्वरीय प्रकृति को साझा करता है। एरियस के लिए, पुत्र केवल एक प्राणी है, और यह केवल ईश्वर पिता ही नहीं है जो सच्चा देवता, शब्द और बुद्धि है। क्षमा करें, यह केवल ईश्वर पिता ही है जो सच्चा देवता, शब्द और बुद्धि है।

पुत्र को एक प्राणी के रूप में शब्द और बुद्धि कहा जाता है, इसका कारण यह है कि वह अनुग्रह और भागीदारी के द्वारा परमेश्वर की बुद्धि को साझा करता है। यही व्याख्या इस बात के लिए भी दी गई है कि क्यों पवित्रशास्त्र पुत्र को थियोस या परमेश्वर की उपाधि देता है। यह केवल सादृश्य द्वारा ऐसा करता है।

इस समझ के अनुसार, एरियस ने सिखाया कि पुत्र ईश्वरीय पूजा के योग्य नहीं है। उसके लिए, मसीह पूर्ण प्राणी और हमारा उद्धारकर्ता है क्योंकि वह लगातार भलाई के प्रति अपनी प्रतिबद्धता में बढ़ता है और इस प्रकार हमारे लिए उदाहरण के रूप में कार्य करता है कि हम कैसे पूर्णता प्राप्त कर सकते हैं और ईश्वरत्व का हिस्सा बन सकते हैं, जैसा कि उसने किया था। तब, पुत्र को केवल मात्रात्मक रूप से हमसे बड़ा माना जाता है।

इसके अतिरिक्त, एरियस इस बात से इनकार करता है कि पुत्र पिता को पूरी तरह से प्रकट करता है क्योंकि वह केवल सृष्टि का मध्यस्थ है। जैसा कि ग्रिलमेयर ने एरियस के लिए चतुराई से देखा, पिता-पुत्र का संबंध ईश्वर-संसार संबंध का एक और पहलू है। और मसीह की उनकी प्रस्तुति में, जैसा कि हम पवित्रशास्त्र उद्धारण में पाते हैं, उसके विपरीत, हम उद्धारशास्त्र या रहस्योद्घाटन के धर्मशास्त्र के बारे में कुछ नहीं सुनते हैं।

पुत्र को आम तौर पर एक ब्रह्माण्ड संबंधी मध्यस्थ के रूप में समझा जाता है, उद्धारण समाप्त। लेकिन एक बात: वह कोई दिव्य उद्धारकर्ता नहीं है जो हमारे मानवीय स्वभाव को अपनाकर और हमें पाप और मृत्यु के विनाश से मुक्ति दिलाने के लिए आवश्यक सभी कार्य करके हमारी ओर से कार्य करता है। इस प्रकार, एरियस के लिए, अवतार हमारे और हमारे उद्धार के लिए ईश्वर पुत्र का आत्म-त्याग नहीं है, बल्कि सृजित पुत्र की महिमा का साधन है।

सच में, एरियनवाद बहुदेववाद और एकेश्वरवाद के बीच एक पुल का दृष्टिकोण है, जिसमें मसीह को अर्ध-ईश्वरीय व्यक्ति के रूप में प्रस्तुत किया गया है। अंत में, एरियस हमें एक ऐसे उद्धार के साथ छोड़ देता है जो स्वयं ईश्वर द्वारा नहीं बल्कि मानवीय उपलब्धि द्वारा प्राप्त किया जाता है। एरियनवाद पूरी तरह से मूर्तिपूजक दृष्टिकोण है और पवित्रशास्त्र के ईश्वर और मसीह का एक स्पष्ट इनकार है।

एरियस के संबंध में एक अंतिम बिंदु जो ध्यान देने योग्य है, विशेष रूप से बाद की शताब्दियों में इसके महत्व को देखते हुए, वह है एक लोगो मांस या सारक्स क्राइस्टोलॉजी की वकालत। यह अभिव्यक्ति एक क्राइस्टोलॉजी को संदर्भित करती है, जो, उद्धरण, मानती है कि लोगो और मांस सीधे मसीह में जुड़े हुए हैं और मसीह में कोई मानव आत्मा नहीं है। अर्थात्, शब्द मांस क्राइस्टोलॉजी का कहना है कि यीशु ने एक शरीर लिया, लेकिन आत्मा नहीं; शब्द मनुष्य क्राइस्टोलॉजी का कहना है कि उसने एक मानव शरीर और आत्मा ली।

शब्द मांस, कोई आत्मा नहीं, शब्द मनुष्य, शरीर और आत्मा। बाद के अपोलिनेरियन पाषंड के प्रकाश में, इस बात पर बहस कि क्या मसीह के पास मानव आत्मा थी, महत्वपूर्ण महत्व की है। जैसा कि चाल्सेडन बाद में तर्क देगा, कोई भी मानवता के लिए मसीह की बाइबिल की शिक्षा को बनाए नहीं रख सकता है, बिना इस बात की पुष्टि के कि पुत्र ने अपनी सभी मानसिक और मनोवैज्ञानिक क्षमताओं के साथ एक मानव आत्मा को अपने पास ले लिया।

लेकिन जैसा कि ग्रिडलमेयर ने उल्लेख किया है, एरियस ने तर्क दिया कि पहले बनाए गए लोगो ने अपने लिए केवल एक मानव शरीर लिया और मानव आत्मा नहीं। तो, मसीह में, दो प्रकृतियाँ नहीं थीं, बल्कि केवल एक मिश्रित प्रकृति थी, और इस प्रकार, लोगो मांस बन गया, लेकिन मनुष्य नहीं, क्योंकि उसने कोई आत्मा नहीं ली। अंत में, एरियस हमें एक ऐसे यीशु के साथ छोड़ देता है जिसे शास्त्र के साथ जोड़ना असंभव है।

क्योंकि उसका यीशु, भले ही वह महान हो, बस एक ऐसा प्राणी है जो हमारे भरोसे और पूजा के योग्य नहीं है और निश्चित रूप से वह ऐसा प्राणी है जो परमेश्वर की अपनी आवश्यकताओं को पूरा नहीं कर सकता और हमें पाप से नहीं बचा सकता। निकेया 325 की परिषद ईसाई चर्च की पहली प्रमुख परिषद थी और हमारे प्रभु के देवता के बारे में निर्णायक परिषद थी। रोमन सम्राट कॉन्स्टेंटाइन ने एरियस और उसके समर्थकों और अलेक्जेंड्रिया के बिशप अलेक्जेंडर और उसके समर्थकों के बीच बढ़ते संघर्ष को हल करने के लिए मुख्य रूप से पूर्व से 318 बिशपों को निकेया शहर में इकट्ठा होने के लिए बुलाया।

एरियन, जो जीत के प्रति आश्वस्त थे, ने निकोमीडिया के यूसेबियस द्वारा तैयार किए गए एक दस्तावेज़, अपने विश्वास का बयान साहसपूर्वक प्रस्तुत किया। इसने स्पष्ट रूप से बेटे के देवता को नकार दिया, जिसने अधिकांश बिशपों को चौंका दिया, और इसे पूरी तरह से खारिज कर दिया गया। इसके स्थान पर, बिशपों ने मसीह के पूर्ण देवता की पुष्टि करते हुए एक पंथ लिखा, इस प्रकार एरियस की शिक्षा और इसे सिखाने वालों को अस्वीकार कर दिया।

परिषद की चिंता एक ईश्वर, सच्चे पिता और उसके सच्चे पुत्र में विश्वास को स्वीकार करना था, इस प्रकार यह पुष्टि करना कि पुत्र कोई प्राणी नहीं था। पवित्र आत्मा के बारे में बहुत कुछ नहीं कहा गया जो बाद में कॉन्स्टेंटिनोपल 381 में आएगा। आज, जिसे हम निकेन पंथ कहते हैं, वह वास्तव में निकिया और कॉन्स्टेंटिनोपल की परिषदों का उत्पाद है, भले ही मूल पंथ का अधिकांश भाग बाद वाले में संरक्षित है।

पहला धर्मसिद्धांत इस प्रकार है: हम एक ईश्वर, सर्वशक्तिमान पिता, सभी चीजों के निर्माता, दृश्यमान और अदृश्य, और एक प्रभु यीशु मसीह, ईश्वर के पुत्र, पिता के एकलौते पुत्र, अर्थात् पिता के सार, ईश्वर के ईश्वर, प्रकाश के प्रकाश, सच्चे ईश्वर के सच्चे ईश्वर, उत्पन्न नहीं हुए, पिता के साथ एकरूप हैं, जिनके द्वारा सभी चीजें अस्तित्व में आईं, स्वर्ग की चीजें और पृथ्वी की चीजें, जो हमारे लिए मनुष्यों और हमारे उद्धार के लिए नीचे आए और देहधारी हुए और मनुष्य बने, दुख उठाया और तीसरे दिन फिर से जी उठे, जीवितों और मृतकों का न्याय करने के लिए स्वर्ग में चढ़े, और पवित्र आत्मा में। लेकिन जो लोग कहते हैं कि एक समय था जब वह अस्तित्व में नहीं था और जन्म लेने से पहले वह अस्तित्व में नहीं था और वह अस्तित्वहीनता से अस्तित्व में आया, या जो आरोप लगाते हैं कि ईश्वर का पुत्र किसी अन्य हाइपोस्टैसिस या ओसिया का है, या परिवर्तनशील या परिवर्तनीय है, कैथोलिक और अपोस्टोलिक चर्च इनकी निंदा करता है। आइये हम नाइसिया के कुछ मुख्य प्रतिज्ञानों पर नजर डालें।

निकिया की सबसे महत्वपूर्ण शिक्षा पुत्र का पूर्ण देवता होना थी, जिसे चर्च ने हमेशा स्वीकार किया है, लेकिन अब एरियनवाद के कारण यह विवाद में है। बिशप ने बार-बार अवतार पुत्र के देवता पर जोर दिया, लेकिन दुर्भाग्य से कुछ अस्पष्टता के बिना नहीं, जिसे बाद में स्पष्टीकरण की आवश्यकता होगी। हालांकि निकिया से कम से कम चार महत्वपूर्ण पुष्टियां हैं जो मसीह के देवता और अवतार के उद्देश्य को रेखांकित करती हैं।

सबसे पहले, बेटे के देवता को इस वाक्यांश में सिखाया जाता है कि बेटा पिता के पदार्थ ओसिया का है। अथानासियस इस संदर्भ के महत्व को समझाते हैं। यह कहना पर्याप्त नहीं था कि बेटा ईश्वर से था, क्योंकि एरियन इस बात से सहमत थे कि सभी जीव ईश्वर से आते हैं।

बल्कि, बिशपों को यह सत्य बताने के लिए बाइबिल से इतर भाषा का उपयोग करना पड़ा कि पुत्र की रचना नहीं की गई है। यह कहते हुए कि पुत्र पिता के सार का था, और फिर बाद में कि वह पिता के साथ समरूप होमो ओसियोस है, बिशप रिकॉर्ड पर जा रहे थे कि पुत्र का अस्तित्व पिता के अस्तित्व के समान है। फिर भी जैसा कि ऊपर उल्लेख किया गया है, इतिहास के इस बिंदु पर, ओसिया, प्रकृति और हाइपोस्टैसिस, व्यक्ति के बीच एक स्पष्ट अंतर अभी तक नहीं खींचा गया था जैसा कि अंतिम अभिशाप में प्रमाणित है।

यही कारण है कि कुछ लोगों ने निकेया को मोडलिज्म की पुष्टि करने वाला माना, जो कि सच नहीं था। हालांकि, अस्पष्टता को दूर करने में एक और आधी सदी लग गई। दूसरा, पिता के संबंध में पुत्र के देवता को भी वाक्यांशों में सिखाया जाता है, जिसमें कहा गया है कि पुत्र पैदा हुआ था, बनाया नहीं गया था, और पिता के एकमात्र जन्म के रूप में पैदा हुआ था।

एरियन ने पुष्टि की थी कि पिता अजन्मा और अजन्मा, शाश्वत था, जबकि पुत्र बनाया गया और जन्मा था। निकेया पूर्व की पुष्टि करता है, लेकिन बाद की नहीं, इस बात पर जोर देकर कि पुत्र शाश्वत और अजन्मा था, और इस प्रकार देवता, जबकि पुत्र की शाश्वत पीढ़ी के संदर्भ में पिता से भी जन्मा था, बनाया नहीं गया था। निकेया स्पष्ट है: पुत्र कोई प्राणी नहीं है, और एक शाश्वत व्यक्तिगत पिता-पुत्र संबंध और व्यवस्था है, एक विषय जिसे बाद में त्रित्ववादी चिंतन में विकसित किया जाना है।

तीसरा, निकेया की इस पुष्टि में कि पुत्र सच्चे ईश्वर का सच्चा ईश्वर था, इसने खुद को एरियनवाद से अलग किया और पुत्र के देवता होने की शिक्षा दी। एरियन स्वीकार कर सकते थे कि पुत्र ईश्वर से था, लेकिन यह कहना कि वह सच्चा ईश्वर था, इसका मतलब है कि वह पिता के समान ही स्वभाव का था। चौथा, निकेया हमें हमारे पापों से बचाने के लिए ईश्वर की समग्र योजना के भीतर अवतार की भी चर्चा करता है।

यह हम मनुष्यों और हमारे उद्धार के लिए मसीह के कार्य में अवतार की बात करता है, इस प्रकार मसीह के कार्य में व्यक्ति को जोड़ता है जैसा कि शास्त्र करता है। यह इस तथ्य पर प्रकाश डालता है कि बिशप केवल अकादमिक सिद्धांत बनाने में रुचि नहीं रखते थे, बल्कि एक ऐसे प्रभु और उद्धारकर्ता को स्वीकार करने में रुचि रखते थे जो हमारी सबसे गहरी ज़रूरत को पूरा कर सके, अर्थात् हमारी मानवता को अपने ऊपर ले लेना और हमें हमारे पापों से बचाने के लिए हमारे साथ एक हो जाना। दूसरे शब्दों में, अवतार का उद्धारक उद्देश्य मसीह की पहचान को सही तरीके से प्राप्त करने के लिए आधारभूत है।

यह समझना कि वह कौन है, यह पुष्टि करने के लिए महत्वपूर्ण है कि वह क्या करता है। मसीह का व्यक्तित्व और कार्य शास्त्र में एक ही हैं। हम उनके व्यक्तित्व को उनके कार्य से अलग करके ठीक से नहीं समझ सकते।

हम निश्चित रूप से उसके कार्य को उस व्यक्ति के अलावा ठीक से नहीं समझ सकते जिसने इसे किया, यानी उसका व्यक्तित्व। निकेया ने समस्याओं का समाधान नहीं किया। परिषद ने स्पष्ट रूप से पुत्र, हमारे प्रभु यीशु मसीह के देवता के लिए तर्क दिया, और मोडलिज्म के खिलाफ पिता से पुत्र के व्यक्तिगत भेद के लिए तर्क दिया।

वास्तव में, निकेया ने जोर देकर कहा कि जब तक बेटा पिता के समान स्वभाव का न हो, होमोउसियोस, वह पूरी तरह से ईश्वर नहीं है। हालाँकि, निकेया इस बारे में स्पष्ट नहीं था कि यह सब एक साथ कैसे फिट बैठता है, और विशेष रूप से, यह निम्नलिखित बिंदुओं पर अस्पष्ट था। सबसे पहले, निकेया अपनी भाषा के उपयोग में अस्पष्ट था।

एरियन बिशप इस बात पर जोर देते रहे कि ग्रीक शब्द ओसिया का अर्थ एक व्यक्ति जैसी व्यक्तिगत वस्तु हो सकता है, जिसे उस समय ओसिया और हाइपोस्टैसिस के समानार्थी उपयोग के रूप में इस्तेमाल किया जाता था। इस प्रकार, यह पुष्टि करना कि बेटा और पिता होमोओसियोस हैं, इसका अर्थ यह भी लगाया जा सकता है कि वे अपने व्यक्तित्व में समान हैं, जो कि मोडलिज्म की पुष्टि होगी। निकेया का यह इरादा नहीं था क्योंकि डोनाल्ड फेयरबर्न के अनुसार, इस शब्द का इस्तेमाल बेटे और पिता के बीच पूर्ण समानता और पहचान पर जोर देने के लिए किया गया था।

लेकिन यह शब्द समस्याग्रस्त साबित हुआ क्योंकि कुछ लोगों को डर था कि इसका मतलब यह हो सकता है कि पिता और पुत्र एक ही व्यक्ति हैं, उद्धारण बंद करें। यह निकेया के बाद ही था कि भाषा के इस प्रयोग को स्पष्ट किया गया ताकि होमोउसियोस इस तथ्य को रेखांकित करे कि तीनों व्यक्ति, पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा, एक सच्चे और जीवित ईश्वर के समान समान दिव्य प्रकृति में

रहते हैं या उनके पास हैं। दूसरा, इसमें कोई संदेह नहीं है कि निकेया ने पुष्टि की कि पुत्र पिता से अलग था, फिर भी यह पर्याप्त रूप से स्पष्ट नहीं करता था कि ऐसा कैसे हो सकता है जबकि ईश्वर अभी भी एक है।

समस्या का मूल कारण, स्पष्ट रूप से, प्रकृति और व्यक्ति के बीच अंतर करने में विफलता थी। अंततः विकसित हुए तकनीकी धार्मिक अर्थ चौथी शताब्दी के अधिकांश समय तक उपयोग में नहीं थे। जैसा कि लेथम हमें याद दिलाते हैं, उन अर्थों को पहले के समय में वापस प्रोजेक्ट करना कालभ्रमित है, जब वे बस लागू नहीं होते थे, उद्धरण बंद करें।

इतिहास के इस क्षण में, ईश्वर के बारे में बताने के लिए एक भी शब्द नहीं था, क्योंकि तीन व्यक्ति सार्वभौमिक सहमति के पात्र थे। जब तक हाइपोस्टैसिस, व्यक्ति, ओसिया, प्रकृति से अलग नहीं हुआ, तब तक चर्च अधिक स्पष्टता के साथ यह कहने में सक्षम नहीं था कि कैसे तीनों व्यक्ति एक ही प्रकृति को साझा करते हैं या रखते हैं, फिर भी वे अपने व्यक्तिगत गुणों और संबंधों से अलग हैं। तीसरा, निकेया ने इस सवाल का जवाब नहीं दिया कि क्या मसीह के पास एक मानवीय आत्मा थी, जिसे एरियन ने नकार दिया।

एथनासियस, जो कि निकेन रूढ़िवाद के रक्षक थे, कम से कम 362 से पहले, इस बिंदु पर स्पष्ट नहीं थे, जबकि टर्टुलियन ने पहले से ही मसीह की मानव आत्मा के अस्तित्व पर जोर दिया था। रूढ़िवाद के रक्षकों ने एरियस के निषेध को चुनौती नहीं दी। यह संभवतः मसीह के देवता की रक्षा करने की उनकी इच्छा के कारण था, फिर भी मसीह की मानव आत्मा की स्थिति को परिभाषित करने की आवश्यकता थी।

अपोलिनरियस के इनकार के बाद ही यह मुद्दा सबसे आगे आया, और चाल्सीडॉन 451 की परिषद द्वारा, चर्च ने स्पष्ट रूप से पुष्टि की कि पुत्र ने अपने लिए एक मानव शरीर और आत्मा ली। फिर भी, विभिन्न पाखंडों का जवाब देने और शास्त्र द्वारा उठाए गए वैध प्रश्नों से जूझने में निकेया द्वारा अनसुलझे छोड़ी गई समस्याओं के बावजूद, चर्च का रूढ़िवादी स्वीकारोक्ति अधिक स्पष्टता और धार्मिक सटीकता के साथ उभरने लगा था। निकेया और चाल्सीडॉन के बीच, और भी अधिक एकता उभरेगी, एक विषय जिसे हम अपने पैट्रिस्टिक क्राइस्टोलॉजी के सारांश में आगे बढ़ाते हैं।

नाइसिया से चाल्सेडन तक क्राइस्टोलॉजी, रूढ़िवाद का उदय। नाइसिया 325 और कॉन्स्टेंटिनोपल की परिषद 381 के बीच के वर्ष त्रित्ववादी और क्राइस्टोलॉजिकल विकास के लिए महत्वपूर्ण थे। भले ही नाइसिन पंथ चर्च का आधिकारिक सिद्धांत था, एरियन प्रभाव जारी रहा, और कई भाषाई और धार्मिक मामलों को हल करने की आवश्यकता थी।

एक सामान्य धार्मिक शब्दावली बनाने में समय लगा जिसने एक महत्वपूर्ण प्रकृति-व्यक्ति भेद स्थापित किया। साथ ही, पिता से अलग पुत्र और आत्मा के व्यक्तित्व को स्थापित करने के लिए और अधिक काम करने की आवश्यकता थी, फिर भी एक ही समान प्रकृति में मौजूद थे। मामलों को जटिल बनाने के लिए, राज्य ने धार्मिक विवादों में एक बड़ी भूमिका निभानी शुरू कर दी,



जैसा कि सम्राटों के बीच दुर्भाग्यपूर्ण सीसों संघर्ष से स्पष्ट है, जिन्होंने या तो रूढ़िवाद या एरियन धर्मशास्त्र के कुछ संस्करण की पुष्टि की।

इस दौरान, एथनासियस और तीन कैप्पाडोसियन धर्मशास्त्रियों की भूमिका महत्वपूर्ण थी, क्योंकि उन्होंने त्रित्ववादी रूढ़िवाद को स्पष्ट करने और अवधारणा बनाने में मदद की, जिसने कॉन्स्टेंटिनोपल के लिए मार्ग प्रशस्त किया और चाल्सेडन परिषद 451 और इसके क्राइस्टोलॉजिकल सूत्रीकरण की नींव रखी। चाल्सेडन परिषद पर हमारी चर्चा के लिए मंच तैयार करने और रूढ़िवादी क्राइस्टोलॉजी के लिए धर्मशास्त्रीय वारंट को खोलना जारी रखने के लिए, आइए हम तीन चरणों में इस महत्वपूर्ण युग पर विचार करें। सबसे पहले, हम निकेया और चाल्सेडन के बीच तीन धर्मशास्त्रीय विकासों का वर्णन करेंगे जो त्रित्ववादी और क्राइस्टोलॉजिकल रूढ़िवाद के लिए आधारभूत थे।

दूसरा, हम तीन झूठे क्राइस्टोलॉजी की रूपरेखा तैयार करेंगे, जिनमें से सभी ने चर्च को चाल्सेडोन में मसीह के बारे में अपनी सोच को स्पष्ट करने में सकारात्मक रूप से मदद की। यह सही है, झूठे क्राइस्टोलॉजी ने चर्च को ईश्वर की कृपा में मदद की क्योंकि, जैसा कि हमने पहले कहा, क्राइस्टोलॉजी का अधिकांश हिस्सा ऐतिहासिक रूप से विवाद धर्मशास्त्र रहा है। तीसरा, हम चाल्सेडोन की ओर रुख करेंगे और रूढ़िवाद के उद्भव के लिए इसके महत्व को उजागर करेंगे, साथ ही कुछ ऐसे मुद्दों को संबोधित करेंगे जो चाल्सेडोनियन क्राइस्टोलॉजिकल विकास के बाद अनसुलझे रह गए।

निकेया से चाल्सेडोनियन तक, महत्वपूर्ण धार्मिक विकास। इस दौरान, तीन धार्मिक विकास हुए, जिन्होंने चर्च को त्रित्ववादी और क्राइस्टोलॉजिकल चर्चा में आगे बढ़ाया। सबसे पहले, अलेक्जेंड्रिया 362 की धर्मसभा में, चर्च ने अंततः प्रकृति-व्यक्ति भेद के संबंध में शब्दावली स्पष्टता हासिल की।

दूसरा, चर्च ने स्पष्ट रूप से कहा कि ईश्वर के अवतार का विषय या व्यक्ति, पुत्र, पृथ्वी पर एक मनुष्य के रूप में रहता है, न कि एक मनुष्य के रूप में जो केवल पुत्र द्वारा निवास करता है। अर्थात्, अवतार का विषय या व्यक्ति ईश्वर पुत्र है जो पृथ्वी पर एक मनुष्य के रूप में रहता है, न कि एक मानव प्राणी के रूप में जो केवल पुत्र द्वारा निवास करता है। तीसरा, चर्च ने पुष्टि की कि पुत्र ने अपने लिए एक मानव शरीर और आत्मा ग्रहण की, इस प्रकार एक शब्द मनुष्य बनाम एक शब्द मांस क्राइस्टोलॉजी पर जोर दिया।

और अब हम इन तीन मामलों पर ध्यान देंगे। प्रकृति-व्यक्ति भेद में विकास। चूंकि विधर्म ने चर्च को अधिक भाषाई और वैचारिक स्पष्टता की ओर अग्रसर किया, इसलिए एथनासियस और कैप्पाडोसियन धर्मशास्त्रियों को अक्सर प्रकृति-व्यक्ति भेद में स्पष्टता प्राप्त करने का श्रेय दिया जाता है, भले ही टर्टूलियन और अन्य लोगों ने इसे एक सदी से भी पहले लागू किया था।

295 से 373 के बीच एथनासियस के बारे में यह कहना अतिशयोक्ति नहीं होगी कि वह प्रो-नाइसीन धर्मशास्त्र, विशेष रूप से मसीह के देवता की रक्षा में एक केंद्रीय व्यक्ति थे। अलेक्जेंड्रिया के आर्कबिशप और कुलपति एथनासियस ने शाही विरोध के कारण बिशप के रूप

में अपने 45 वर्षों में से लगभग एक तिहाई निर्वासन में बिताए। उनके विरोधियों ने उन्हें एक अनम्य, असहिष्णु और एक-मुद्दे वाले व्यक्ति के रूप में देखा।

लेकिन सच में, वह आस्था के नायक थे। 328 में अलेक्जेंड्रिया के बिशप नियुक्त होने के बाद, उन्हें दो मुख्य धार्मिक मोर्चों पर विरोध का सामना करना पड़ा: मोडलिज़्म और एरियनिज़्म। एन्सिरा के मार्सेलस के खिलाफ, जिन्होंने हाइपोस्टैसिस और ओसिया के बीच शब्दावली संबंधी भ्रम के कारण मोडलिज़्म का बचाव करने के लिए निकेया से अपील की, अथानासियस ने पिता और पुत्र के बीच अंतर के लिए तर्क दिया, फिर भी पुत्र के पूर्ण देवता के लिए।

एरियनवाद और उसके विभिन्न रूपों के विरुद्ध, उन्होंने पिता के साथ पुत्र की पूर्ण समानता और ईश्वरत्व के लिए तर्क दिया। एथनासियस ने जोर देकर कहा कि जब तक पुत्र वास्तव में ईश्वर नहीं है, तब तक विशिष्ट बाइबिल शिक्षा झूठी है। उदाहरण के लिए, यह पुष्टि करना गलत होगा कि पुत्र ईश्वर का पूर्ण प्रकटीकरण है, कि वह छुटकारे का दिव्य कार्य करता है, कि उसकी पूजा की जानी चाहिए, और कि हम विश्वास के द्वारा उसके साथ जुड़े हुए हैं।

पुत्र केवल एक प्राणी है तो ये सभी सत्य असंभव हैं। रॉबर्ट लेथम के अनुसार, एथनासियस के तर्कों में यह देखना महत्वपूर्ण है कि एथनासियस किस तरह से ईश्वरीय व्यक्तियों के बीच आर्थिक संबंधों से शाश्वत आसन्न संबंधों की ओर बढ़ता है। वह सृष्टि, विधान और छुटकारे में पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा के एक-दूसरे के साथ संबंधों से निपटता है।

वह पिता, पुत्र और आत्मा के बीच शाश्वत संबंधों के पीछे से तर्क करता है। अथानासियस ने जोर देकर कहा कि त्रिएक ईश्वर का ज्ञान और हमें जो मोक्ष मिलता है, वह पुत्र के माध्यम से आता है, इसलिए जो कुछ भी पिता में है वह पुत्र में है, और जो कुछ भी पिता के पास है, वह पुत्र के पास है। चूंकि पिता कोई प्राणी नहीं है, इसलिए पुत्र भी नहीं है।

इसके बजाय, हमें पुत्र के बारे में सोचना चाहिए कि उसकी कोई शुरुआत नहीं है और वह पिता के साथ शाश्वत संबंध में है। साथ ही, अथानासियस ने पिता, पुत्र और आत्मा के परस्पर एक दूसरे में निवास करने के संदर्भ में व्यक्तियों की एकता की कल्पना की, जिसे बाद में पेरिचोरेसिस कहा जाता है। पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा परस्पर एक दूसरे में निवास करते हैं।

वे परस्पर एक दूसरे में हैं। वे एक दूसरे में ऐसे निवास करते हैं जैसे केवल ईश्वर ही कर सकता है। यह, निश्चित रूप से, त्रिदेव और व्यक्तियों की समानता के लिए एक तर्क है।

यीशु ने यूहन्ना 14 में, कम से कम पिता, पुत्र के सम्बन्ध में, इस बात की अपील की, जब उन्होंने कहा, क्या तुम नहीं समझते, थॉमस, कि मैं पिता में हूँ और पिता मुझ में है? परंपरागत रूप से, पवित्र आत्मा पेंटेकोस्ट के बाद है, लेकिन व्यवस्थित धर्मशास्त्र कहता है कि यूहन्ना यह नहीं कहता कि पिता, पुत्र और आत्मा परस्पर एक दूसरे में निवास करते हैं। यह कहता है कि पिता और पुत्र एक दूसरे में निवास करते हैं, लेकिन यह न केवल तार्किक बल्कि एक ठोस धार्मिक कदम है कि इसका अर्थ यह है कि पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा परस्पर एक दूसरे में निवास

करते हैं। इन तरीकों से, अथानासियस चर्च को दिव्य प्रकृति की एकता और दिव्य व्यक्तियों के बीच अंतर के बारे में सोचने में मदद करने के लिए एक वैचारिक तंत्र प्रदान करता है।

लेथम ने भी एथनासियस के योगदान को इसी तरह से बताया है। ईश्वर के एक अस्तित्व में पुत्र और आत्मा के देवत्व और उनके आपसी सह-अनुपालन में तीनों के संबंधों के बारे में उनके द्वारा की गई विस्तृत व्याख्याएँ समझ में क्रांतिमय प्रगति थीं और त्रिदेव और इस प्रकार क्राइस्टोलॉजी के अधिक सटीक दृष्टिकोण के मार्ग पर बहुत बड़े मील के पत्थर थे। एथनासियस के योगदान के साथ-साथ तीन कैप्पाडोसियन धर्मशास्त्रियों का काम भी था, जिन्होंने प्रकृति-व्यक्ति भेद के संबंध में और अधिक वैचारिक स्पष्टता स्थापित करने में मदद की। कैसरिया के बेसिल 329-379, नाज़ियानज़स के ग्रेगरी 329-390, और निस्सा के ग्रेगरी 335-395।

इन लोगों ने पुत्र और आत्मा के पूर्ण ईश्वरत्व पर जोर देकर होमोउसियोस की दृढ़ता से पुष्टि की, जिसमें पिता से उनके शाश्वत व्यक्तिगत भेद भी शामिल थे। एथनासियस के साथ, उनके प्रयासों ने चर्च को दो महत्वपूर्ण बिंदुओं को स्थापित करके प्रकृति-व्यक्ति भेद करने में मदद की। सबसे पहले, उन्होंने सिखाया कि ईश्वर प्रकृति में एक है, एकता है, न कि केवल एकरूपता, जो खुद को एक ही इच्छा, एक ही गतिविधि और एक ही महिमा के रूप में प्रकट करता है।

तीनों व्यक्ति, पिता, पुत्र और आत्मा, दिव्य प्रकृति में रहते हैं और समान रूप से समान दिव्य गुण रखते हैं, तीन अलग-अलग प्राणियों के रूप में नहीं, बल्कि एक सच्चे और जीवित ईश्वर के रूप में। जब दिव्य प्रकृति के बारे में सोचा जाता है, तो यह किसी सामान्य श्रेणी से संबंधित नहीं होता है, जिसमें प्रत्येक व्यक्ति संबंधित होता है, समानांतर रूप से मानव जाति एक प्रजाति है, जिसमें प्रत्येक व्यक्ति संबंधित होता है। मनुष्यों के मामले में, मानवता किसी विशेष संख्या में मनुष्यों के साथ समान नहीं है, न ही किसी भी समय अस्तित्व में सभी मनुष्यों के साथ।

इसके विपरीत, ब्राउन के अनुसार, ईश्वरीय प्रकृति ईश्वर के समान है और केवल तीन व्यक्तियों में ही विद्यमान है। ईश्वरीय व्यक्ति अलग-अलग हैं, फिर भी उन्हें ईश्वरत्व या एक-दूसरे से अलग नहीं किया जा सकता। इस प्रकार, पिता, पुत्र और आत्मा प्रकृति में समान हैं।

वे एक ईश्वर हैं। या जैसा कि लेथम ने संक्षेप में कहा, उद्धरण, इससे यह निष्कर्ष निकलता है कि एक समान दिव्य सत्ता पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा द्वारा साझा की जाती है। तीनों व्यक्ति एक ही पदार्थ के हैं।

वे तीनों एक ही तत्व हैं। तीनों एक ही सत्ता के हैं, होमोओसियोस। ईश्वर का सार या सत्ता एक ही है, जिसे तीनों व्यक्ति पूरी तरह से साझा करते हैं।

दूसरा, यह एक ईश्वर अनेकता है, या बेहतर है, हाइपोस्टेसिस या व्यक्तियों की त्रिमूर्ति है। क्योंकि ईश्वर निर्मित दुनिया के प्रति एक ही इच्छा से कार्य करता है, इसलिए उनके व्यक्तिगत भेदों को केवल शास्त्र में ईश्वर के आत्म-प्रकटीकरण और उनके बाहरी या आर्थिक कार्यों द्वारा ही देखा जा सकता है, ओपेरा एड एक्स्ट्रा। दिव्य व्यक्ति के आंतरिक या आसन्न संबंधों के बारे में सोचते हुए, ओपेरा एड इंटरा, कैप्पाडोसियन ने बाइबिल की शब्दावली का सादृश्य रूप से उपयोग किया और

उनके और प्रत्येक व्यक्ति के गुणों के बीच संबंधों की बात करके ईश्वरत्व के व्यक्ति के हाइपोस्टेसिस को अलग किया।

अजन्मापन या अजन्मापन कह सकते हैं। पिता, जन्म, या पीढ़ी, पुत्र, और क्रम, आत्मा, इस बात पर जोर देते हुए कि तीनों व्यक्तियों में एक ही समान प्रकृति और गुण हैं। डोनाल्ड फेयरबर्न इसे इस तरह से समझाते हैं, उद्धरण, पुत्र पिता द्वारा जन्मा है, और आत्मा पिता से निकलती है।

इसका मतलब यह है कि, पुत्र और पिता के बीच का संबंध आत्मा और पिता के बीच समान नहीं है, भले ही तीनों व्यक्तियों में समान विशेषताएं हों, उद्धरण बंद करें। इस प्रकार, तीनों व्यक्तियों में समान रूप से समान गुण होते हैं और वे संचार और एकता में समान दिव्य प्रकृति में रहते हैं, फिर भी पिता, पुत्र और आत्मा एक दूसरे से अपने अद्वितीय व्यक्तिगत गुणों और एक दूसरे से संबंधों के कारण अलग हैं। प्रत्येक व्यक्ति एक दूसरे के बराबर ईश्वर है, इस प्रकार अधीनतावाद के किसी भी संकेत को हटा दिया गया है जिसने पहले चर्च को त्रस्त कर दिया था।

फिर भी व्यक्तियों के बीच एक व्यवस्था, टैक्सस भी है जो अभिव्यक्ति में संरक्षित है, उद्धरण, पिता से पुत्र के माध्यम से पवित्र आत्मा द्वारा, उद्धरण बंद करें। संबंधों को उलटा नहीं किया जा सकता है और लोगों को एक दूसरे से अलग करने में मदद करता है। इन वैचारिक भेदों के आधार पर, चर्च त्रिदेव के सिद्धांत को बेहतर धार्मिक स्पष्टता देने में सक्षम था, जैसा कि 381 में कॉन्स्टेंटिनोपल की परिषद में प्रमाणित है।

यह परिषद एरियन विवादों का अंतिम निष्कर्ष था, और इसने एरियनवाद और मोडलिज्म सहित अधीनतावाद के सभी रूपों को अस्वीकार करके और निकेन पंथ को फिर से लिखकर एथनासियस और तीन कैप्पाडोसियन धर्मशास्त्रियों के प्रयासों को ताज पहनाया ताकि इसमें पवित्र आत्मा और चर्च के बारे में एक तीसरा लेख शामिल हो। इसने इस बात पर जोर दिया कि ईश्वर एक ही प्राणी है, फिर भी यह एक ईश्वर हमेशा के लिए तीन अलग-अलग व्यक्तियों से बना है। प्रत्येक व्यक्ति एक समान दिव्य प्रकृति में पूरी तरह से साझा करता है और इस प्रकार एक ही प्रकृति, होमोउसियोस का है, और प्रत्येक व्यक्ति अपने आप में ईश्वर है।

इसके अलावा, यह समझाने के लिए कि तीन अलग-अलग व्यक्तियों के बीच ऐसी संख्यात्मक पहचान कैसे संभव थी, चर्च ने जॉन 14, 10-11 से संकेत लेते हुए इस अद्भुत रहस्य पर चिंतन करके अथानासियस और कैप्पाडोसियन की अंतर्दृष्टि पर निर्माण किया। मैं पिता में हूँ, और पिता मुझमें है। यही है, पेरिकोरेसिस या सह-अस्तित्व का विचार।

चर्च ने तर्क दिया कि एक ईश्वरत्व के भीतर, तीन व्यक्ति एक दूसरे के साथ सह-अस्तित्व में हैं और एक दूसरे में समाहित हैं। समय के हिसाब से, पेरिकोरेसिस का अर्थ है कि पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा एक ही समय या एक ही अनंत काल में रहते हैं और उसे भरते हैं। प्रत्येक की उत्पत्ति नहीं हुई है, एजेनेटोस, अंतहीन और शाश्वत है।

स्थानिक रूप से देखा जाए तो इसका मतलब है कि प्रत्येक व्यक्ति और सभी व्यक्ति एक साथ एक ही स्थान पर रहते हैं और उसे भरते हैं। प्रत्येक व्यक्ति सर्वव्यापी है और दूसरों से भ्रमित नहीं होता। प्रत्येक व्यक्ति विशालता को भरता है।

इसके अलावा, प्रत्येक में दूसरा समाया हुआ है। प्रत्येक दूसरे में निवास करता है। प्रत्येक दूसरे में व्याप्त है।

प्रत्येक स्थिति दूसरे के अस्तित्व के तरीके को निर्धारित करती है। कोई भी, यहाँ तक कि पिता भी, दूसरों के बिना वह नहीं हो सकता जो वह है। चर्च ने हमेशा स्वीकार किया है कि त्रिदेव और विशेष रूप से अंतर-त्रिदेव व्यक्तिगत संबंधों की एकता को समझाने का प्रयास करना कठिन है, क्योंकि मानवीय अनुभव में, इसका कोई सादृश्य मौजूद नहीं है।

कुछ लोग विवाह सम्बन्ध की अपील करते हैं, लेकिन यहाँ भी, यह सफल नहीं हो पाता, क्योंकि ईश्वर के अस्तित्व में, जैसा कि मैकलियोड ने उल्लेख किया है, पूर्ण सह-अस्तित्व के लिए न तो शारीरिक और न ही मानसिक बाधाएँ हैं, क्योंकि दिव्य व्यक्तियों का स्वभाव एक ही है। जैसे ही ईश्वर स्वयं को प्रकट करता है और संसार में कार्य करता है, चाहे वह सृष्टि, विधान या मुक्ति में हो, वह स्वयं को प्रकट करता है और एक ईश्वर के रूप में कार्य करता है। फिर भी एक ईश्वर जो स्वयं को प्रकट करता है और इस संसार में कार्य करता है, वह त्रिएक है, क्योंकि तीनों व्यक्ति एक ही स्वभाव में सह-अस्तित्व में हैं।

एक व्यक्ति का ऐसा कोई कार्य नहीं है जिसमें दूसरों का कार्य शामिल न हो, ठीक वैसे ही जैसे व्यक्तियों के साथ संबंध के अलावा ईश्वर की प्रकृति के साथ कोई संबंध नहीं है। फिर भी क्योंकि व्यक्ति अलग-अलग हैं, भले ही त्रिएक ईश्वर के कार्य तीनों के लिए समान हैं, प्रत्येक व्यक्ति एक ही तरह से कार्य नहीं करता है। जैसा कि मैकलियोड कहते हैं "त्रिएक ईश्वर बनाता है, लेकिन पिता अपने पिता को बनाता है, बेटे को बेटे या लोगो के रूप में बनाता है, और आत्मा को आत्मा के रूप में बनाता है। प्रत्येक अपने उचित तरीके से काम करता है।"

यही बात ईश्वर के सभी कार्यों, विशेष रूप से छुटकारे के लिए भी कही जा सकती है।

पिता अपने बेटे को भेजकर अपने पिता को छोड़ता है। बेटा देहधारी होकर, अपने जीवन और मृत्यु में अपने लोगों का प्रतिनिधित्व करके, और हमारे उद्धार के लिए क्रूस पर खुद को प्रतिस्थापित करके छोड़ता है। आत्मा पुत्र के कार्य को हम पर लागू करके छोड़ता है ताकि संपूर्ण त्रिएक ईश्वरत्व को सारी महिमा और प्रशंसा मिले।

क्राइस्टोलॉजी के लिए यह चर्चा क्यों महत्वपूर्ण है? इस कारण से, जब तक चर्च ने इन मामलों पर वैचारिक स्पष्टता हासिल नहीं कर ली, तब तक क्राइस्टोलॉजिकल विकास आगे नहीं बढ़ सका। चाल्सीडॉन के बाद, ट्रिनिटेरियन सूत्रीकरण को चर्च के इतिहास में पहले की तुलना में अधिक मजबूत आधार पर रखा गया था। एक बार जब यहाँ सहमति हुई, और विशेष रूप से महत्वपूर्ण प्रकृति-व्यक्ति भेद में, अधिक विस्तृत क्राइस्टोलॉजिकल चिंतन हो सकता है।

इस समय तक, एरियनवाद पराजित हो चुका था और अब मसीह के ईश्वरत्व पर कोई प्रश्न नहीं था। अब, चर्च को इस बात पर संघर्ष करना था कि मसीह की मानवता और ईश्वरत्व को एक साथ कैसे जोड़ा जाए और मसीह के व्यक्तित्व की एकता की कल्पना कैसे की जाए। इसके अलावा,

यह इस समय के दौरान था कि बहस की औपचारिक रेखाएँ स्थापित की गईं ताकि चर्च के इतिहास के बाद के समय में भी, लोग अभी भी इन बुनियादी मापदंडों के भीतर बने रहे।

वास्तव में, ऐसा लगता है कि बाद की सदियाँ केवल पिछली चर्चा में समय-समय पर फुटनोट जोड़ रही हैं और रूढ़िवाद के वर्तमान खंडन से पहले के विचारों का बचाव कर रही हैं। हमारे, उह, हमारे अगले व्याख्यान में, हम अवतार के विषय या व्यक्ति के बारे में स्पष्ट रूप से सोचने के बारे में बात करेंगे, और अवतार को शब्द-मनुष्य बनाम शब्द-मांस ढांचे में समझेंगे, और फिर हम निकिया से चाल्सेडोन की ओर बढ़ेंगे।

यह डॉ. रॉबर्ट पीटरसन हैं जो क्राइस्टोलॉजी पर अपनी शिक्षा दे रहे हैं। यह सत्र 3, पैट्रिस्टिक क्राइस्टोलॉजी, भाग 2, उत्पत्ति और निकिया की परिषद है।